بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
बयान फ़र्मूदा 19 जून, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(अहसान महीने की तिथि 19 ,1405 हश)

आँहज़रत ﷺ के अज़ीम उसवा ए जूदो सख़ा (दानशीलता) की रौशनी में आप स. के अख़लाक़ ए फ़ाज़ला का दिल आवेज़ तज़करा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 19.06.2026
محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
امّا بعد فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم۔بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
اَلْحَمْدُ لِلهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۔ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّينَ۔

तशहुद, तअव्वुज़, सूर: फ़ातिहा, की तिलावत के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल् अज़ीज़ ने फ़रमाया: एक रवायत में आता है कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरीؓ बयान करते हैं कि अंसार के बाज़ लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ से मांगा। आपؐ ने उन्हें दिया। फिर उन्होंने मांगा और आपؐ ने दिया। उन्होंने फिर मांगा और आपؐ ने फिर दिया यहाँ तक कि आपؐ के पास जो कुछ था वो ख़त्म हो गया। आपؐ ने फ़रमाया: जो माल भी मेरे पास होगा मैं उसे हरगिज़ तुम से छुपा कर नहीं रखूँगा। और जो सवाल से बचेगा तो अल्लाह तआला भी उसे बचाएगा और जो दुनिया के माल से बेनियाज़ होना चाहेगा अल्लाह तआला उसे बेनियाज़ कर देगा और जो अपने नफ़्स पर बोझ डाल कर सब्र करेगा अल्लाह तआला भी उस को सब्र देगा और सब्र से बेहतर और वसीअ (विशाल) किसी को कोई नेमत (अनुकम्पा) नहीं दी गई।

हज़रत इब्ने उमरؓ बयान करते हैं कि हम नबी ﷺ के साथ एक सफ़र में थे और मैं एक मुँह-ज़ोर ऊँट पर सवार था जो दूसरी सवारियों से आगे बढ़ जाता था। हज़रत उमरؓ उसे रोकते और डाँटते थे। यह देख कर रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि यह ऊँट मुझे क़ीमतन दे दें। हज़रत उमरؓ ने अर्ज़ किया कि यह आपؐ का ही है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि मुझे यह फ़रोख़्त कर दो। चुनाँचे उन्होंने वह ऊँट आपؐ को फ़रोख़्त कर दिया। फिर नबी ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर! अब यह ऊँट तुम्हारा है। अब इससे जो चाहो करो। हुज़ूरे अनवर ने

फ़रमाया कि तोहफ़ा देने का भी अन्दाज़ है। फिर यह भी समझा दिया कि यह तो जानवर है अगर सवारियों से आगे बढ़ जाता है तो कोई बात नहीं और अब तो यह ऊँट रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़रीद लिया तो अगर यह दूसरी सवारियों से आगे बढ़ेगा भी तो यही कहा जाएगा कि रसूलुल्लाह ﷺ का ऊँट ही आगे बढ़ा है।

एक ग़ज़वे में हज़रत जाबिरؓ का ऊँट थक गया और चलने में सुस्त हो गया जिसकी वजह से वे लश्कर से पीछे रह गए। रसूलुल्लाह ﷺ उन के पास आए और ख़ैरियत दरयाफ़्त की। जाबिरؓ ने ऊँट की थकावट का ज़िक्र किया। आँहज़ूर ﷺ ने अपनी खूंटी से ऊँट को खींचा और फ़रमाया कि अब इस पर सवार हो जाओ। हज़रत जाबिरؓ कहते हैं कि मैं सवार हो गया और मैंने देखा कि वो इतना तेज़ हो गया कि रसूलुल्लाह ﷺ की सवारी से भी आगे बढ़ने लगा, जिस पर मुझे उसे रोकना पड़ा। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे दरयाफ़्त फ़रमाया क्या तुमने निकाह कर लिया है मैं ने अर्ज़ किया जी हाँ। आपं ने फ़रमाया देखो तुम अपने घर पहुँचने वाले ही हो जब पहुँचो तो अक़लमंदी से, एहतियात से काम लेना। घर में हुस्ने सुलूक होना चाहिए। फिर आपं ने फ़रमाया क्या तुम अपना यह ऊँट मुझे बेचोगे? मैंने कहा जी हाँ तो आप ने वो मुझसे एक ओक़िया चाँदी पर ख़रीद लिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझसे पहले मदीना पहुँचे और मैं अगली सुब्ह को पहुँचा। आपं ने फ़रमाया: अपना ऊँट छोड़ दो और मस्जिद में जा कर दो रक्अत नमाज़ पढ़ो चुनाँचे मैं अन्दर गया और नमाज़ पढ़ी। हज़रत बिलाल से आप ने फ़रमाया इसे एक ओक़िया तोल कर चाँदी दे दो। हज़रत बिलाल ने तोल में तराज़ू को झुकाया यानी थोड़ा सा ज़्यादा दिया इससे। फिर मैं पीठ मोड़ कर चला गया। आप स. ने फ़रमाया जाबिर को मेरे पास आने के लिए बुलाओ। फ़रमाया अपना ऊँट ले लो और उसकी क़ीमत भी तुम्हारी है। वो कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से दिए गए इस तोहफ़े में इतनी बरकत पड़ी कि ऊँट हज़रत उमर के ज़माने तक ज़िन्दा रहा।

आप स. के नमूने, आपकी तरबियत और आपकी क़ुव्वते क़ुदसी का असर था जो सब सहाबा पर था। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर भी यह असर था और इसी वजह से आपने बग़ैर किसी तंगी के ख़ौफ़ से अपना माल आपके सुपुर्द कर दिया। चुनाँचे बयान किया जाता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत ख़दीजा के पास तशरीफ़ लाए और आप कुछ मुतफ़क्किर थे। हज़रत ख़दीजा ने आपसे पूछा कि क्या हुआ? आपने फ़रमाया कि ज़माना क़ह्त (भुखमरी) का है मुझे तुमसे शर्म आती है कि अगर मैंने माल ख़र्च किया तो तुम्हारा माल ख़त्म हो जाएगा और अगर मैं ख़र्च न करूँ तो मैं अल्लाह से डरता हूँ। हज़रत अबू बक्र रजी. बयान करते हैं कि हज़रत ख़दीजा रज़ी. ने दीनार निकाले और उनका ढेर लगा दिया यहाँ तक कि माल की कसरत (अधिकता) की वजह से मैं यह नहीं देख पा रहा था कि मेरे सामने कौन बैठा है। फिर हज़रत ख़दीजा ने कहा तुम गवाह रहो यह सारा माल आँहज़रत सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम का है अगर वो चाहें तो इसे ख़र्च कर दें और अगर चाहें तो इसे अपने पास रख लें। उन्होंने दे दिया आपं की फ़िक्र दूर करने के लिए कि ठीक है आप ख़र्च करें।

एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ के पास हाज़िर हुआ और कुछ मांगा। आपं ने फ़रमाया कि मेरे पास इस वक़्त कुछ नहीं है। तुम मेरे नाम से चीज़ें ख़रीद लो जब मेरे पास कुछ आएगा तो मैं क़ीमत अदा कर दूँगा। हज़रत उमरँ ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह ﷺ! आप इसको पहले दे चुके हैं और जो आपकी ताक़त में नहीं अल्लाह तआला ने आपं को उसका ज़िम्मेदार नहीं ठहराया। आँहज़ूर ﷺ ने हज़रत उमरँ की बात नापसन्द फ़रमाई। अंसार में से एक शख़्स ने कहा कि या रसूलुल्लाह ﷺ! आप ख़र्च करें और ख़ुदाए ज़ुल-अर्श की तरफ़ से फ़क़्र (ग़रीबी) से न डरें। अंसारी की इस बात पर आपं ने तबस्सुम फ़रमाया और ख़ुशी आपं के चेहरे से ज़ाहिर होने लगी। आपं ने फ़रमाया कि इसी का मुझे हुक्म दिया गया है।

आँहज़ूर ﷺ को एक सहाबीँ ने खजूरें और ककड़ियाँ पेश कीं। इसी वक़्त आपं के पास बहरैन से सोने के ज़ेवरात आए। आँहज़रत ﷺ ने मुट्ठी भर ज़ेवर इन खजूरों और ककड़ियों के बदले में अता फ़रमा दिए।

ऐसा शख़्स जो मक़रूज़ फ़ौत हो जाए और उसकी अदायगी के लिए उसने माल न छोड़ा हो तो आँहज़ूर ﷺ मुसलमानों को इर्शाद फ़रमाते कि तुम अपने भाई की नमाज़े जनाज़ा पढ़ लो। आपं फ़रमाते मैं मुसलमानों का उनके रिश्तेदरों से भी ज़्यादा क़रीबी हूँ। इसलिए मोमिनों में से जो फ़ौत हो और वो क़र्ज़ा छोड़ जाए तो उसका अदा करना मेरे ज़िम्मे है और जो माल छोड़ जाए तो वो उसके वारिसों का है।

हुज़ूरे अनवर ने रसूलुल्लाह ﷺ के क़र्ज़ की अदायगी के हवाले से हज़रत बिलालँ की तफ़्सीली रवायत पेश फ़रमाई जिसमें अल्लाह तआला ने ग़ैर-मामूली अन्दाज़ में क़र्ज़ की अदायगी का सामान अपनी जनाब से फ़रमाया। जब तमाम क़र्ज़ अदा हो गया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ बिलाल! क़र्ज़ की अदायगी के बाद जो माल बच गया है उसे ग़रीबों पर ख़र्च कर दो। वह रात आपं ने मस्जिद में गुज़ारी और घर तशरीफ़ न ले गए। अगले रोज़ पूछने पर हज़रत बिलालँ ने बताया कि तमाम माल ख़र्च हो गया है तो आपं ने अल्लाह की बड़ाई और हम्द बयान की और फिर आपं अपनी अज़वाज के पास तशरीफ़ ले गए।

हज़रत इब्ने उमरँ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत ज़ुबैरँ को जहाँ तक उनका घोड़ा दौड़े वहाँ तक जागीर अता करने का इर्शाद फ़रमाया। घोड़ा दौड़ कर रुक गया तो ज़ुबैरँ ने अपना कोड़ा फेंका जो दूर तक गया। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि इसे वहाँ तक ज़मीन दे दो जहाँ तक उसका कोड़ा गया है।

हज़रत मसीह मौऊदं फ़रमाते हैं कि आँहज़रत ﷺ ने एक दफ़ा अपने घर में आकर पूछा कि हमारे घर में क्या है? आइशाँ ने दो अशर्फियाँ (सोने के सिक्के) निकाल कर दीं कि यही हैं। आँहज़ूर ﷺ ने हथेली पर वे अशर्फियाँ रख लीं और फ़रमाया कि क्या हाल है उस नबी का जो पीछे दो अशर्फियाँ छोड़ जाए और फिर उसी वक़्त वो अशर्फियाँ तक़्सीम फ़रमा दीं।

हुनैन की जंग में छह हज़ार या आठ हज़ार लौंडियाँ और ग़ुलाम, चौबीस हज़ार ऊँट और चालीस हज़ार से ज़ायद भेड़-बकरियाँ, चार हज़ार ओक़िया (चार सौ नव्वे किलो ग्राम) चाँदी माले ग़नीमत में हासिल हुई। आपं ने माले ग़नीमत की तक़्सीम का आग़ाज़ तालीफ़े क़ल्ब (दिलों को मोहने) से किया। (जिनको पहले धन देना शुरू किया) ये अरब के बड़े लोग थे और अपने-अपने क़बीलों में शरफ़ और बुज़ुर्गी का मक़ाम रखते थे। आपं ने उन्हें मानूस करने के लिए माल अता फ़रमाया।

आपं ने इस मौक़े पर अबू सुफ़ियान और उनके बेटों को इस क़दर माल अता फ़रमाया कि अबू सुफ़ियान बोल उठे कि या रसूलुल्लाह ﷺ! आप करीम हैं। मेरे माँ-बाप आपं पर क़ुर्बान। मैंने आपसे जंगें की हैं और आपं क्या ही अच्छे जंगजू हैं और मैंने आपसे सुल्ह की है और आपं क्या ही अच्छी सुल्ह करने वाले हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि आपं के पास एक मौक़े पर बहुत सी भेड़-बकरियाँ थीं। एक काफ़िर ने कहा कि आपके पास इस क़दर भेड़-बकरियाँ जमा हैं कि क़ैसरो किसरा के पास भी इस क़दर नहीं। आपने उसी वक़्त सब उसको बख़्श दीं वो उसी वक़्त ईमान ले आया कि नबी के सिवा कोई इस क़दर अज़ीमुश्शान सख़ावत नहीं कर सकता।

ग़ज़वाए हुनैन वाले दिन एक औरत आई और उसने अश्आर पढ़े जिनमें आपके बनू हवाज़िन में रज़ाअत के दिनों का ज़िक्र था। आपने यह अश्आर सुन कर बनू हवाज़िन का सारा माल उन्हें वापस कर दिया और साथ ही उन्हें मज़ीद इतना माल अता फ़रमाया कि जिसकी मालीयत पांच लाख दिरहम के बराबर थी।

आँहज़ूर ﷺ के अख़लाक़े फ़ाज़िला का ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊदं फ़रमाते हैं कि उनमें कमाल दर्जे का एतदाल (संतुलन) पाया जाता था, और हर एक ख़ुल्क़ अपने-अपने महल (अवसर) और मौक़े पर ज़ाहिर होता था और इन अख़लाक़े फ़ाज़िला में आपकी सख़ावत भी फ़ी महल्लही (उचित स्थान और अवसर पर) थी, और ईसार (क़ुर्बानी) भी फ़ी महल्लही ही था और करम (दया भाव) भी फ़ी महल्लही ही था।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि जिस तरह आँहज़ूर ﷺ की तालीम मुतवाज़िन है इसी तरह आपका हर अमल भी इसके मुताबिक़ मुतवाज़िन था। अल्लाह तआला हमें आँहज़रत ﷺ की सीरत के हर पहलू पर ग़ौर करने और अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْ کُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131